2026 Volume: 02 Issue: 03 www.ijrpa.com ISSN 2456- Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-06

जैविक विविधता की आवश्यकता एवं महत्व

***डॉ० अमित कुमार दास**

सहायक प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भागलपुर – 812003

Article Received: 14 February 2026
Article Revised: 05 March 2026
Published on: 25 March 2026

***Corresponding Author: डॉ० अमित कुमार दास**
सहायक प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भागलपुर – 812003
DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.3089

एक समय था जब कि पृथ्वी पर कृषि व्यवस्था तथा उसमें उत्पादित होने वाले खाद पदार्थ की मात्रा अथाह थी। लेकिन आज उस स्थिति में परिर्वतन आ गया है। और वह जब पर्याप्त की श्रेणी में आ जाता है। संतोष यही है। कि यह सामग्री पुनः प्राप्त की जा सकती है। अतः यदि बुध्दि मत्ता से उत्पादन का प्रबन्धन हो तो पूरे विश्व में रहने वाले प्राणी वर्ग को उसके खाने पीने और अन्य पदार्थों की पूर्ति की जा सकेगी। पर इसके लिए प्राकृतिक विविधता का उपयोग करना होगा जिसें आज हम जैविक विविधता के नाम से नामित करते है। प्रारम्भ में विश्व में खाद्यान्न की कमी को पूरा करने के उद्देश्य से हरित कान्ति की कल्पना की थी जिसे 1968 में संयुक्त राज्य के कृषि विभाग के निदेशक विलियम गैड ने नाम दिया था। उन्होंने पाया कि अन्न की विशेष जाति से है भारत और पाकिस्तान में गेंहूँ तथा फिलीपाइन्स में चावल का अधिक उत्पादन हुआ है। बाद में भारत में पाँच मुख्य खाद्यान्न गेंहूँ, चावल, मक्का, बाजारा और ज्वार पर शोध कर अधिक उत्पादन वाली किस्म तैयार की। वस्तुतः यही कृषि क्षेत्र में विविधता कहलाई। पर शनैः शनैः यह जाना जाने लगा कि यह विविधता सभी सजीव पदार्थों व वस्तुओं में है। और प्रगति के लिए इसका सम्भव है। तभी से जैविक विविधता की उपयोग को प्रयोग में लाया जाने लगा।

जैविक विविधता और उसका कार्यक्षेत्र :- जैविक विविधता के विषय में एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तावना में प्रस्तुत किया गया है। और साथ ही इसकी एक अधिकृत परिभाषा भी दी गई है। इससे यह तो स्पष्ट है कि)जैविक विविधता एक समूहाची शब्द है जिससे पृथ्वी के सभी प्रकार के राजीव प्राणी पौधे, प्राणी, पशु सुक्ष्म जीव जन्तु समाहित है। वस्तुतः इसमें प्रजातियों के अन्तर्गत के बीच तथा परितंत्र की विविधताएँ साम्मिलित है।(
अतः जब भी हम विविधता की बात करते है। तब हम पूरे पृथ्वी के परितत्रों)स्थलीय जलीय और वायुमण्डलीय(के अन्दर के समस्त सजीव और निर्जीव वस्तुओं के परस्पारिक व्यवहार की बात करते है। इस विविधता मेंजीने के लिए यथेष्ट भोजन, पानी, वायु, कपडा मकान की प्रचुरत उपलब्ध कराई है।

तथा अनेक प्रकार की सांस्कृतिक विविधता को जन्म दिया है। कुछ विशेष यहाँ तक कहते है, कि यदि जैविक विविधता को आज के वर्तमान युग में नहीं देखा जाता तो शनैः शनैः परम्पराएँ रीति रिवाज और अनेक प्रकार की पारम्परिक गतिविधियाँ ही समान्त हो जाती है। और इस पृथ्वी के समस्त प्राणी वर्ग अतन्त कठिन को भुगतते हुए न आने लिये कुछ जुटा पाते और ना आने वाली कुछ पीडियों के लिये कुछ छोडतें। जैविक विविधता के विशिष्ट योगदान को यहाँ बिन्दुवार समेकित किया गया है। (यधपि इनका विस्तृत विवरण आगे इसी अध्याय में और दिया गया है।(

1. भोजन पानी औषधियों तथा उघोंगों के लिये कच्चा सामान
2. पानी की स्वच्छता
3. मिटटी की पुनः संरचना तथा उसके उपजाऊपन का नियंत्रण और रखाव
4. जलीय क्षेत्रों की सुरक्षा
5. अधिक ताप का नियंत्रण
6. वायुमण्डल का रखरखाव आदि ।

इनसे हम निष्कर्ष तो निकाल ही सकते है कि जैविक विविधता हमारें जीवन के हर क्षेत्र में नितान्त उपयोगी है। जैविक विविधता की विश्वस्तर पर महत्ता को स्वीकारते हुये संयुक्त राष्ट्र ने एक विशेष सत्र का 1992 में आयोजित रीओ डी जैनी में किया गया था। उसमें सभी आवश्यक विषय वस्तु का विश्लेषण कर एक प्रतिवेदन के रूप में प्रसारित किया गया। यह प्रतिवेदन विशेषतः)1) जैविक विविधता क्यों)2) जैविक विविधता की योजना और कियान्विति)3) जैविक विविधता की उपयोगिता)4) जैविक विविधता के कियान्वयन में सहयोग और भागीदारी तथा)5) विशिष्ट शब्दावली के स्पष्टीकरण को सार्वभौमिक उपयोग हेतु प्रस्तुत किया गया है। यह भी अपेक्षा की गई है। कि सभी देश अपने अपने स्तर पर जैविक विविधता की योजना तैयार कर उसका सफल कियान्वयन करें।

जन सामान्य के लिए जैविक विविधता :- भारत में ही नही बल्कि विश्व मे अनेक देश जैविक विविधता की शब्दावली से परिचित बहुत अल्प समय पूर्व ही हुये। उस पर भी विडबना यह कि वहाँ का सामान्य आदमी इसके बारे में कुछ नही जान सका। जिन देश में (विकसित देशों को छोड़कर(इसे जानने की प्रयास किया गया वहाँ भी यह केवल रिपोर्ट सरकारी कार्यवाही कार्यदलों के गठन देशानुकूल सिफारिशें क्रियान्यवन रूपरेखा निर्माण तक सीमित रहा। एक अन्य सोचने योग बात यह रही कि जैविक विविधता का कार्यक्षेत्र केवल कृषि उत्पादन अथवा मछली उत्पादन तक मानकर इसे सम्बधित विभाग का

कार्यक्रम बना दिया गया जबकि जैविक विविधता का कार्य क्षेत्र सभी प्रकार के)स्थलीय, जलीय, वायुमण्डलीय(सभी प्रकार के परितंत्रों का था।

अ- जैविक विविधता की आवश्यकता एवं महत्व :- व्यावहारिक जीवन में जैविक विविधता के महत्व व आवश्यकताओं को साधारणतः क्रमबद्ध करना कठिन है क्योंकि यह प्राणी मात्र के जीवन के हर क्षेत्र को किसी न किसी प्रकार लाभ पहुँचाता है। और वस्तुत हमें स्वस्थ सुखी प्रसन्नचित और स्फूर्तिमय रखता है। दैनिक जीवन के आधार पर एक सूची यहाँ इसी कम में प्रस्तुत है।

1. **हम जैविक विविधता में जीते है** पृथ्वी पर की सभी चीजे जो हमें निरापद रूप से मिल पाती है। उसका श्रेय जैविक विविधता को जाता है। पीने योग्य पानी स्वच्छ वायु उपजाऊ मिटटी जिससे हमे अन्न मिलता है इसी की देन है। पेड़ों से ऑक्सीजन का मिलना फैक्ट्रीज से निकली ऑक्साइड को आत्मसात करना घर और और कार्यालय को शुद्ध हवा उपलब्ध कराना खेतो में अनेक जीवों से उन को सुरक्षित रखना अनेक कीडे मकोंडों की सहायता से मिटटी को उपजाऊ बनाना आदि विविध कार्य जैविक विविधता की महत्ता को ही बताते है। एक प्रकार से हम यह कह सकते है। कि यह हमें सुखमय जीवन के विभिन्न आयामों का स्त्रोत केन्द्र है।
2. **खाने पर हमें जैविक विविधता मिलती है** खाने कि मेज पर उपलब्ध भोज्य सामग्री)अन्न, मॉस, मछली, अण्डे(दूध, दही, आइसकीम, फल, सब्जियाँ अचार और अन्य सामग्री सभी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जैविक विविधता का प्रतिफल है खेतों से आहार पशुओं से दूध, समुद्र से माँसाहारी पदार्थ, मुर्गियों से अण्डे आदि जीव विविधता से निरन्तर मिलती रहती है। जैविक विविधता गुणवत्ता बनाये रखती है।
3. **जैविक विविधता हमें स्वस्थ रखती है** जैविक विविधता का एक और महत्वपूर्ण योगदान इसके द्वारा प्रतिपादित जंगल और वन्य प्रजाति से सम्बधित है। वह है कि यह हमें स्वस्थ रखती है। एक समय था जब कि विश्व की शत प्रतिशत औषधियाँ केवल पेड़-पौधो अथवा विभिन्न पशुओ और जीव जन्तुओं से प्राप्त होती थी और आज से कोई 50 वर्ष पूर्व भी कोई 3 अरब मनुष्य जंगली जडी बुटियों और उनसे निमिर्त विभिन्न दवाइयों पर ही आधारित थे आज भी अनेक पोधों के बावजूद इन विविध प्रजातियों को नकारा नही गयां चीन 5100 प्रजातियों, अमेरिका में 3000 प्रजातियों का आज भी उपयोग एन्टीबायोटिक तथा अन्य दवाइयों में प्रयोग होता है। भारत में तो पूरा आर्युविज्ञान उपचार प्रणाली इन धरेलु और इन जंगली पेड पौधों पर आधारित है। अनेक एलोपेथिक उपचारों में केवल नाम अंग्रेजी के है। जबकि दवाईयों में अवस्तु सभी सामान्य पौधों के सत्व है। निश्चित ही यह प्रभावी उपचार प्रणालियाँ जैविक विविधता की पहचान कराती है।

4. **जैविक विविधता हमें भोजन आवास कपडा उपलब्ध कराती है** किसी भी देश की कृषि केवल अन्न उपजाने तथा अन्न उपजाने के साध्य ही नही है। बल्कि इसके साथ साथ यह जैविक विविधता के भण्डार भी है। जिनकी सुरक्षा और संरक्षण से ही हम रह पा रहें है, और जी पा रहें है। आवास हेतु लकड़ी कपड़ों हेतु रूई ऊन में अन्य पदार्थ और पेट भरने हेतु अनेक प्रकार के अन्न, फल, सब्जियों, मॉस, मछली, दूध, कीम और इन सभी की अनेकानेक किस्में जैविक विविधता की ही देन है।

5. **जैविक विविधता परिस्थितिकी तंत्र को स्थायित्व प्रदान करती है** किसी भी आबादी तथा प्रजाति का अस्तित्व तथा विशेष में निजि वस्तुओं से इनकी पारस्परिक सकियता से सम्भव है। जिससे उनके परिस्थितिकी तंत्र स्थिरता से सुनिश्चित होती है। जैविक विविधता इन सभी परिस्थितिकी तंत्रो को नियमित रूप से चलते रहने में और उसका स्थायित्व प्रदान करने की महती भूमिका निभाती है।

6. **जैविक विविधता हमारे व्यक्तित्व में नयापन लाती है** हमारी परस्पारिक गतिविधियों में विविधताओं की समविष्टि ने मनुष्य के जीवन में अनेक परिर्वतन किये है। केवल भोजन आवास और कपडा ही नही बल्कि आमोद प्रमोद की विविधताओं रीति रिवाजों में से पारम्परिक एकाकीपन का अलगाव रहने सहने के नये रंग ढंग स्वास्थ और स्वाच्छ जीवन शैली की पद्धति वार्तालाप का उलासित और उमंग भरा तरिका आदि सभी ने मनुष्य के व्यक्तित्व में एक एसा नया पन ला दिया है। जिससे जीवन दर्शन का स्वरूप प्रसन्तामय, सुखमय और शान्तिपूर्ण हो गया है अप्रत्यक्ष रूप से यह सब जैविक विविधता के फलस्वरूप ही है।

इनके अतिरिक्त भी जैविक विविधता का योगदान हम निम्न प्रकार भी पाते है-

1. जैविक विविधता हमें पारम्परिक शैलियों से सम्बन्ध जोड़ें रखती है।
2. जैविक विविधता हमारी आर्थिक सम्पन्नता में वृद्धि करती है।
3. जैविक विविधता हमें आश्चर्य में डालती है।
4. जैविक विविधता हमारी ग्रह की सुरक्षा करती है।
5. जैविक विविधता हमारी पृथ्वी को स्वच्छ रखती हैं।
6. जैविक विविधता हर क्षेत्र में वृद्धि करती है।

इस प्रकार जैविक विविधता की अवश्यकता और उसके महत्व को हम किस स्तर तक स्वीकारते है यह हमारा अपना दृष्टिकोण है।

ब-जैविक विविधता की सुरक्षा और संरक्षण के लिये वांछनीय कार्य :- जन साधारण और उनके परिवारों के सभी सदस्यों को जैविक विविधता के महत्व को समझना चाहिए। अतः यह आवश्यक है कि

उनके प्रति दिन के कार्यकलाप चाहे वह घर में हों चाहे बाहर चाहे शहर में शापिंग को जाये अथवा पर्यटन में चाहें जगते हो या सोते हो इस उद्देश्य से सम्पन्न हो कि जैविक विविधता हानि नष्ट न हो दुरुपयोग न हो क्योंकि कोई गलत कार्य व्यहार अप्रत्यक्ष ही कई असाधारण हनि कर सकता है।

1. अपने घर के बगीचे को जैविक विविधता का साधारण सा संरक्षण केन्द्र बनायें)यथासम्भव स्थानीय पौधों को महत्त्व दें(
2. पानी का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करें रिसतें नालों को के लॉन हतोत्साहित करें)बचे पानी से डेम भरे जा सकते है जिससे अधिक जरूरत का उत्पादन हो सकता हैं(।
3. घर के कटे टूटे वृक्ष झाडियों को यू न रहनें दे)यह पक्षियों के आवास स्थल बनगें(।
4. अपने घर तथा आस पडोस के स्थान तथा रास्ते और सडकों पर उग रहें जंगली पौधों को रहने दे (इनमें असंख्य जैविक विविधता भरी पड़ी है जिन्हें हम जानतें नही सम्भव है। इनमे अनेक औषधीय पौधे हो(।
5. खरीददारी करते समय अनचाहें पेंकिंग कि औपचारिकता से बचें आखिर घर पर आकर इन्हे डस्टविन में डाल देंगें)प्राकृतिक संसाधन बचेंगें तो जैविक विविधता संरक्षित होगी(।
6. प्लास्टिक थैले का उपयोग ना करें)यह घरों में संस्थाओं में ड्रेनेज को रोकेगी नदियों में अन्य जल स्त्रोंतों के जानवरों के जाने लेगी वस्तुत जैविक विविधता के सामान्य चक में बाधा डालेगी ।
7. स्थानीय दवाओं का प्रयोग करें जी मचलने में अमृतधारा, एण्टीसेप्टि, लोशन के लिए नमक और फिटकरी, खून राकने के लिये, हल्दी खांसी के लिए, आ सा के पत्तों का रस आदि)जैविक विविधता का इससे अच्छा उपयोग क्या हो सकता है।
8. पुनः चक्रीय कागजो का पुस्तक कापियों तथा ऑफिस कार्यों में उपयोग करें)लाखों पेड़ों को बचाना और मिलियन्स घन मीटर का पानी की बचत सम्भव है।(
9. घर में वृक्षों में गिरी पत्तियों से खाद बनाइए)यह अच्छी गुणवत्ता की भी होगी और पैसों की बचत होगी(
10. मिटटी की सुरक्षा कीजिए इसे बरसाती पानी अथवा अन्य प्रकार से बह रहे जल के साथ जाने से रोकिये मिटटी बाधनें वाले पौधे लगाइये)एक चम्मच पर मिटटी का अरबों खरबो बैक्टीरिया तथा सूक्ष्म जीव हो सकते है जिनसे पूरे देश की भोजन समस्या हल करने के लिए अन्न उपजाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, पी.डी.)2004) इकोलॉजी एण्ड एनवायरन्मेन्ट, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, इण्डिया ।
2. सिंह, ए.)2007) वोरहेविया डिफ्यूजाः एन ओवर ऐक्सप्लॉयटेड प्लाण्ट ऑफ मेडिसिनल इमपॉरटेन्स इन रूरल एरियाज ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश, करेण्ट साइन्स, खण्ड-93, अक-4. पृ. 4461
3. मेस, जी.एम. तथा स्टुअर्ट, एस.)1994), ड्राफ्ट आई यू सी एन रेड लिस्ट कटेगरीज, वरजन 2.2 स्पीसीज 21/22: मु.पू. 13-141
4. आई यू सी एन)1994 डी(आई यू सी एन रेड लिस्ट कटेगरीज, आई यू सी एन, इंग्लैण्ड ।
5. विल्सन, ई.ओ. एवं पिटर्स, एफ.एम.)1988) बायोडाइवर्सिटी)संपादित(, नेशनल एकेडमी प्रेस, वाशिंगटन डी.सी. ।